XII/188

ESTABLISHED IN 1907

TELEGH. "ABHYUDAYA"

FOUNDED BY
Mahamana Pandit Madan Mohanji Malaviya

THE ABHYUDAYA

...dest, the most popular and widely circulated Independent Hindi Weekly of India

ALLAHABAD .... 195 .

“ 'सरमद' गिला इख़्तेसार मीबायद कर्द।
यक कार अज़ीं दो कार मीबायद कर्द।
या तन बरज़ाये दोस्त मीबायद दाद,
या क़ते नज़र ज़े यार मीबायद कर्द॥”

अनुवाद— “ सरमद शिकवा और शिकायत अब तू बिलकुल ही मत कर।
दोउ ढंगी चाल छोड़ चल केवल एक मार्ग ही पर।
खुशी खुशी या तो यह जीवन प्रियतम पर कर न्योछावर,
या तो उससे आँख फेर ले तू सदैव को ही सत्वर॥” (प.का.मा.)

“ ऐ शाह कि तुरा ताजे जहाँबानी दाद।
मारा हमा असबाब परेशानी दाद।
पोशान्द लिबास हरकिरा ऐबदीद,
बे ऐबाँ रा लिबासे उरियानी दाद॥”

अनुवाद— “हमने माना तुमको ईश्वर ने दुनिया का राज दिया।
किन्तु मुझे भी परेशानियों का है उसने ताज दिया।
वस्त्र मिले दुनियावालों को, अपने ऐब छिपाने को,
दोष विहीनों को नंगेपन का उसने है साज दिया॥”
(प.का.मा.)

महर्षि कण्व शकुन्तला को लेकर दुष्यन्त के राजप्रासाद में पहुंचे। राजा वैसे ही आराम करने के लिये अपने शयन कक्ष में गये थे। कंचुकी बड़ी दुविधा में पड़ा। राजा को आराम करने में बाधा पहुंचावें या नहीं? अन्त में यह सोचकर राजा को जगा दिया

“ भानुः सकृद्युक्ततुरंग एव,
रात्रिंदिवं गंधवहः प्रयाति।
शेषः सदैवाहित भूमिभारः,
षष्ठांशवृत्तेरपि धर्म एव॥” अनुवाद

सूर्य सदा अपने घोड़ों को जोते रहते हैं, वायु रात दिन चला करता है, शेषनाग सदा भूमि को धारण किये रहते हैं, षष्ठांशवृत्ति अर्थात राजा का भी यही धर्म है।

Sincerely yours
P. K. Malaviya

Shri J. N. Ugra I.A.S.
Collector & District Magistrate
Allahabad.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

ESTABLISHED IN 1907

TELEGH. "ABHYUDAYA"

FOUNDED BY
Mahamana Pandit Madan Mohanji Malaviya

THE ABHYUDAYA

dest, the most popular and widely circulated Independent Hindi Weekly of India

ALLAHABAD..............................195 .

Dear Shri Ugra Saheb,

Herewith I am sending you a copy of some extracts from my diary about the damage claims of mine. It speaks for itself. I need not add anything to it. I do not remember anything that merited such a treatment. Your tour as well as ministers programme are all fixed up before hand and you must not be unaware of them. If you did not want to see me, you should not have given me appointments at all. But I do not blame you for all this. I can imagine your difficulties but there is a limit to my patience also. I will end this letter with a few quotations from poems which you so much like and relish.

" [illegible] फ़क़ीरों से पूछते भी नहीं।
कि तुम लगाये हुये किसकी आस बैठे हो?"

" क्या दिल में नहीं दोस्त का पता न मिला।
वो बदनसीब हूं काबे में भी खुदा न मिला॥"

" दोस्तों से हमने वो सदमे उठाये जान पर।
दिल से दुश्मन की अदावत का गिला जाता रहा॥"

" किसी दयार में ग़म का समाँ नहीं बदला।
ज़मीं बदलती गई आसमाँ नहीं बदला॥"

" फिर चलते चलते बादेबहार उसने कह दिया।
फिर उठ खड़ा हुआ रोग उसी इत्तफ़ाक़ का॥"

" गुल चमन में भी किसी सूरत से जी लगता नहीं।
हाँ मगर जबतक क़फ़स में थे क़फ़स बदनाम था॥"

" खोया न जा सनमकदये कायनात में।
महफ़िल गुदाज़ गरमिये महफ़िल न कर क़बूल॥
बातिल दुई पसन्द है, हक़ लाशरीक है।
शिरकत मियानये हक़ो बातिल न कर क़बूल॥"

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India